अभिनव गवेषणा

(मल्टी डिस्प्लनरी क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जनरल)

संरक्षक मण्डल

मानवेन्द्र स्वरूप (एडवोकेट), सचिव - दयानन्द शिक्षण संस्थान, कानपुर

डॉ. राम शरण श्रीवास्तव (पूर्व आई. ए. एस.)

प्रधान सम्पादक **डॉ. शिव बालक द्विवेदी** (पूर्व प्राचार्य) बद्री विशाल पीजी कालेज, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

सम्पादक **डॉ. अलका द्विवेदी** एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी, जुहारी देवी गर्ल्स (पी.जी.) कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

शोध कार्य- यू. जी. सी. द्वारा अनुदानित एक लघु शोध परियोजना, लगभग 70 से अधिक नेशनल सेमिनारों, विभिन्न कान्फ्रेंसों में शोध पत्रों की प्रस्तुतियाँ, 12 कार्यशालाओं में सहभागिता, 11 अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों एवं कान्फ्रेंसों में शोध पत्रों की प्रस्तुतियाँ, अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का संयोजन, शोध पर्यवेक्षक एवं 02 छात्राओं को शोध निर्देशन।

प्रकाश्य कृति - 03 पुस्तकें प्रकाशित- (1) भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त (प्रथम संस्करण), (2) भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त (संशोधित संस्करण), (3) आधुनिक हिन्दी व्यंग्य काव्य और काका हाथरस।

सदस्यता- भारतीय हिन्दी परिषद, ऑल इण्डिया ओरिएन्टल कांफ्रेन्स, इंडियन एसोसिएशन ऑफ टीचर एजूकेटर्स, नव निकष, दि गुंजन, अभिनव गवेषणा, मीमाँसा, विज्ञान भारती आदि शोध पत्रिकाओं-संस्थाओं में आजीवन सदस्य तथा कृतिका, वाग्प्रवाह अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (यू. एस. ए.), N.G.O.'s, आर्ट्स - मैनेजमेन्ट एण्ड सोशल साइंस रिसर्च जर्नल आदि पत्रिकाओं, संस्थाओं में संपादकीय परामर्शदात्री समिति की सदस्या।

सम्मान एवं पुरस्कार- कानपुर विद्या मंदिर महिला महाविद्यालय, कानपुर द्वारा सर्वोत्तम छात्रा पुरस्कार, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा राष्ट्रीय सेवायोजना के सर्वोत्कृष्ट कैडेट पुरस्कार, हिन्दी के विकास हेतु विशेष योगदान के लिए गौतम बुद्ध पंचशील शोध साहित्य संस्कृति संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मान, भारत विकास परिषद सोशल रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर 'प्रशस्ति पत्र', 'आगमन' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समूह द्वारा सम्मान, अकबरपुर महाविद्यालय द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर 'साहित्यकार' के रूप में सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आगमन समूह द्वारा **'स्पेशल जूरी अवार्ड-2017'** से सम्मानित।

निवास एवं सम्पर्क - 401, मुरली मनोहर अपार्टमेन्ट तिलक नगर, कानपुर-208005, (उत्तर प्रदेश)

मो.- 09839308148**, E-mail : dralkadwivedi@rediffmail.com**

सम्पादक मण्डल

● **Dr. Jai Prakash Bharadwaj Prof. Hindi Language & Literature, University of Rome La Sopienza, P. Le. Aldo Moro, Rome,** ● **Dr. Veena Sharma H. O. D. Curriculum Development Hindi Society, Singhapore,** ● **Dr. Tanuja Pudarvth Bee Harry Head of Dept.-Hindi (RTSS) Mauritius,** ● **Dr. Alok Kumar (Principal) Chinmaya Degree College, Haridwar (U.K.),** ● **Dr. Davendra Bhasin (Principal) D. A. V. College, Dehradun (U.K.),** ● **डॉ. गायत्री सिंह** (प्राचार्य) आरमापुर पी. जी. कालेज, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. साधना सिंह** (प्राचार्या) दयानन्द गर्ल्स पी. जी. कालेज, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. बेबीरानी अग्रवाल** (प्राचार्या) महिला महाविद्यालय पी. जी. कालेज, किदवई नगर, कानपुर (उ. प्र.), ● **डॉ. ममता खरे** (प्राचार्या) कानपुर विद्या मंदिर (पी. जी.) कालेज, स्वरूप नगर, कानपुर (उ. प्र.)।

हिन्दी -

डॉ. इन्द्रदेव आर सिंह श्रीमती आर पी भालोडिया महिला कालेज, कोलकी रोड, उपलेटा, राजकोट (गुजरात

डॉ. अनुपमा त्रिपाठी डी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

डॉ. रेखा उपाध्याय डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

डॉ. आशा वर्मा डी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज, कानपुर

अंग्रेजी -

डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ (उ.प्र.)

डॉ. मंजू तिवारी डी. ए. वी. कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

डॉ. सुचित्रा मिश्रा महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

डॉ. निवेदिता टण्डन डी. जी. (पी. जी.) कालेज, कानपुर

संस्कृत-

डॉ. सविता भट्ट डी.ए.वी.(पीजी) कॉलेज, देहरादून (उत्तरा.)
डॉ. अर्चना श्रीवास्तव महिला महाविद्यालय, कानपुर
डॉ. आशारानी पाण्डेय डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. शक्ति पाण्डेय डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर

शिक्षाशास्त्र -

डॉ. अरविन्द नारायण मिश्र उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
डॉ. ममता दीक्षित महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. शशीरानी अवस्थी डी. जी. (पी. जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. बिन्दुमती देवी उत्तरा. संस्कृत वि. वि., हरिद्वार (उत्तरा.)

राजनीतशास्त्र -

डॉ. सुभाष मिश्रा एस. पी. एस. गंगटोक, सिक्किम
डॉ. अजय सक्सेना डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून
डॉ. पप्पी मिश्रा डी जी. (पी.जी.) कालेज, कानपुर
डॉ. मनोरमा गुप्ता डी. ए. वी. कॉलेज, कानपुर

अर्थशास्त्र -

डॉ. हरीशचन्द्र जोशी कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल
डॉ. अलका सूरी डी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. नरेश कुमार गर्ग एस एम जे एन पीजी कालेज, हरिद्वार
डॉ. पियूष मिश्रा डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)

मनोविज्ञान -

डॉ. सरिता मिश्रा डी. ए. वी. कालेज, कानपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. नीता गुप्ता डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. मोनिका सहाय एस.एन.सेन. पी.जी. कालेज, कानपुर
डॉ. रश्मि रावत डी. ए. वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून(उत्तरा.)

समाजशास्त्र -

डॉ. सत्यम द्विवेदी डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तरा.)
डॉ. मृदुला शुक्ला कानपुर विद्या मंदिर (पीजी) कालेज, कानपुर
डॉ. पारितोष सिंह डी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तरा.)
डॉ. भावना महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

इतिहास -

डॉ. अंजूबाली पाण्डेय डी.बी.एस.(पीजी)कालेज, देहरादून(उत्तरा.)
डॉ. मीरा त्रिपाठी महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
श्रीमती सुमन शुक्ला गवर्नमेन्टगर्ल्स डिग्रीकालेज, बांगर-कन्नौज

रसायन विज्ञान -

डॉ. एस.एन.राम विभागाध्यक्ष जनता कालेज बकेवर, इटावा
डॉ. अर्चना पाण्डेय ब्रह्मानन्द डिग्री कॉलेज, कानपुर
डॉ. दिव्य ज्योति मिश्र जनता कालेज बकेवर, इटावा

भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान-

डॉ. ए. के. अग्निहोत्री ब्रह्मानन्द डिग्री कॉलेज, कानपुर
डॉ. प्रकाश दुबे जनता कालेज बकेवर इटावा
डॉ. जे. पी. शुक्ला डी .बी. एस. (पी.जी.) कालेज, कानपुर

वाणिज्य -

डॉ. ब्रजेश उपाध्याय महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, सतना (मध्य प्रदेश)
डॉ. सुनीलकुमार बत्रा एस.एम.जे.एन.कालेज,हरिद्वार (उत्तरा.)
श्री योगेश शुक्ला जनता कालेज, बकेवर, इटावा (उ. प्र.)

भूगोल-

प्रकाशचन्द्र सान्याल डीएसबी कैम्पस कुमायूँयूनि., नैनीताल (उत्तरा.)
ऋचा त्रिपाठी पी. पी. एन. कालेज, कानपुर
प्रमोद कुमार सिंह गुरू अंगद देव महाविद्यालय, बाजपुर, कुमायूँ यूनिवर्सिटी, उत्तराखण्ड

चित्रकला -

डॉ. राजकिशोरी सिंह ए. एन. डी. कॉलेज, कानपुर (उ.प्र.)
डॉ. वन्दना शर्मा महिला महाविद्यालय पीजी कालेज, कानपुर

संगीत एवं वादन -

डॉ. निष्ठा शर्मा महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)
डॉ. सुनीता द्विवेदी जुहारीदेवी डिग्री कालेज, कानपुर (उ.प्र.)

प्रबन्ध सम्पादक एवं प्रकाशक

सर्वेश तिवारी 'राजन' विश्वबैंक बर्रा, कानपुर-27

सभी संपादकीय दायित्व पूर्णतः अवैतनिक हैं।

संपादक : डॉ. अलका द्विवेदी

एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी विभाग,

जुहारी देवी गर्ल्स (पी.जी.) कालेज, कैनाल रोड, कानपुर नगर-208004

शोध कार्य- यू. जी. सी. द्वारा अनुदानित एक लघु शोध परियोजना, लगभग 70 से अधिक नेशनल सेमिनारों, विभिन्न कान्फ्रेंसों में शोध पत्रों की प्रस्तुतियाँ, 12 कार्यशालाओं में सहभागिता, 11 अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों एवं कान्फ्रेंसों में शोध पत्रों की प्रस्तुतियाँ, अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का संयोजन, शोध पर्यवेक्षक एवं 02 छात्राओं को शोध निर्देशन

प्रकाश्य कृति - 03 पुस्तकें प्रकाशित- (1) भारतीय एवं पाश्चा य काव्य सिद्धान्त (प्रथम संस्करण), (2) भारतीय एवं पाश्चा य काव्य सिद्धान्त (संशोधित संस्करण), (3) आधुनिक हिन्दी व्यंग्य काव्य और काका हाथरसी **I.S.S.N.** नम्बर यु त अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल्स एवं यू. जी. सी. द्वारा चयनित जर्नल में 10 शोध पत्र **एवं I.S.B.N.** नम्बर से यु त विभिन्न पुस्तकों में लगभग 27 शोध पत्र प्रकाशित, विभिन्न रचनात्मक लेखों एवं पुस्तकों में सहलेखन की भूमिका

सदस्यता- भारतीय हिन्दी परिषद, ऑल इण्डिया ओरिएन्टल कांफ्रेन्स, इंडियन एसोसिएशन ऑफ टीचर एजूकेटर्स, नव निकष, दि गुंजन, अभिनव मीमाँसा, विज्ञान भारती आदि शोध पत्रिकाओं-संस्थाओं में आजीवन सदस्य तथा कृतिका, वाग्प्रवाह अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति (यू. एस. ए.), N.G.O.'s, आर्ट्स - मैनेजमेन्ट एण्ड सोशल साइंस रिसर्च जर्नल आदि पत्रिकाओं, संस्थाओं में संपादकीय परामर्शदात्री समिति की सदस्या।

सम्मान एवं पुरस्कार- कानपुर विद्या मंदिर महिला महाविद्यालय, कानपुर द्वारा सर्वोत्तम छात्रा पुरस्कार, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा राष्ट्रीय सेवायोजना के सर्वोत्कृष्ट कैडेट पुरस्कार, हिन्दी के विकास हेतु विशेष योगदान के लिए गौतम बुद्ध पंचशील शोध साहित्य संस्कृति संस्थान, लखनऊ द्वारा सम्मान, भारत विकास परिषद, सोशल रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर 'प्रशस्ति पत्र', 'आगमन' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समूह द्वारा सम्मान, अकबरपुर महाविद्यालय द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर 'साहित्यकार' के रूप में सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आगमन समूह द्वारा **'स्पेशल ज्यूरी अवार्ड-2017'** से सम्मानित

निवास एवं सम्पर्क - 401, मुरली मनोहर अपार्टमेन्ट तिलक नगर, कानपुर-208005, (उत्तर प्रदेश)

मो.- 09839308148, **E-mail : dralkadwivedi@rediffmail.com**

सभी संपादकीय दायित्व पूर्णतः अवैतनिक हैं।

नोट- प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है समस्त वाद का क्षेत्र कानपुर होगा

स्वत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रबन्ध सम्पादक सर्वेश तिवारी `राजन'** द्वारा के-444 `शिवराम कृपा', विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027 से मुद्रित एवं **सुपर प्रकाशन के-444 `शिवराम कृपा', विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027 से प्रकाशित। सम्पादक - **डॉ. अलका द्विवेदी** मो.- 09839308148। **सम्पर्क -** मो.- 08896244776, 09335597658 **E-mail: super.prakashan@gmail.com,**

Website : www.abhinavgaveshana.com

संपादकीय

कौन कहता है कि हिन्दी अशुद्ध हो गई है? बाजारू, सस्ती और घटिया हो गई है। अपनी अस्मिता के गौरव को भूल गई है। अपनी राह से भटक गई है। अपनी मूल जड़ों से कट गई है। या दिग्भ्रमित हो चली है। नहीं मित्रो, नए शब्दों के पंख लगाकर हिन्दी 'साइबर स्पेस' के संजाल में उड़ कर भूमण्डलीय हो गई है। जरा इंटरनेटी हो गई है। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट काम हो गई है। विश्वव्यापी और सर्वग्राही हो रही है। इसमें गुडमार्निंग, सलाम, नमस्ते, सतश्री अकाल, वड़क्कम सब कुछ एक साथ मिलता है। आप भले ही इसे भाषा की अशुद्धता का नाम दें या फिर 'कॉकटेली' हिन्दी कहें लिबरल, सोफ्ट या ग्लोबल हिन्दी, चाहें कुछ भी कहें लेकिन हिन्दी नए क्षितिज की ओर विकासोन्मुख हो विश्व पटल पर अपना नाम अंकित कर रही है।

आज समय की माँग है- हिन्दी। मार्केट की डिमांड है- हिन्दी। मुनाफे की भाषा है- हिन्दी। इसे किसी शुद्धता के मानकों की कसौटी में न कसिए। भाषा नदी के प्रवाह की तरह अपने आप रपटती, फिसलती, तैरती अपने मार्ग को स्वयं प्रशस्त कर लेती है। 'नमामिः गंगे' की तरह तमाम अशुद्धता को समेटने के बावजूद अपनी व्यापकता, विश्वग्रहता, सार्वजनीन हो कालजयी बनकर युगतारिणी हो जाती है अपने मानकों को स्वयं गढ़ती है, आज इसी ओर अग्रसर है हिन्दी। दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन भोपाल में इस दृढ़ संकल्प के साथ समाप्त हुआ कि 'नई सहस्त्राब्दि में हिन्दी को विश्व भाषा बनाना है'। वर्तमान इक्कीसवीं सदी के उत्तर आधुनिक इंटरनेट युग में हिन्दी की नई चाल इसी चुनौती को स्वीकार कर मूर्त रूप प्रदान कर रही है, जिसके पीछे संचार माध्यमों और हिन्दी पत्रकारिता की महत्ती भूमिका है।

जनतंत्र में मीडिया 'फोर्थ स्टेट' के रूप में विद्यमान होता है। वर्तमान सूचना क्रान्ति के इस 'साइबर' दौर में, मीडिया ने अपने संचार माध्यमों के साथ विश्व पटल पर नई इबारत लिखी है। विश्व के कोने-कोने में आज हिन्दी देखी, पढ़ी और लिखी जा रही है। सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और रोजगार को प्रदान करने वाले पुरोधा के रूप में मीडिया उभरकर हमारे सामने खड़ा है। हिन्दी पत्रकारिता हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, फिल्म, कम्प्यूटर या टी.वी. चैनल्स हर क्षेत्र में हिन्दी आज अपने को स्थापित कर चुकी है। देश के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले अखबारों की सूची में पहले तीन स्थानों पर हिन्दी के अखबारों की गूँज है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी और दूसरे भारतीय भाषा के चैनलों ने, अंग्रेजी को लगभग देश निकाल दे दिया है। विज्ञापन बाजार की कैमिस्ट्री ने बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को हिन्दी में विज्ञापन के लिए नतमस्तक किया है। देश-दुनिया का हाल जानने के लिए 'गूगल समाचार' अब हिन्दी में उपलब्ध है। किसी अखबार के किस पोर्टल में कौन-सी खबर है इसे आप तुरन्त जान सकते है। ज्ञान-विज्ञान के सबसे बड़े विश्वकोश 'विकीपीडिया' अब इंटरनेट हिन्दी में उपलब्ध है।

हिन्दी को विश्व-व्यापी बनाने में जो कार्य हमारे देश की शासननीति, शिक्षण संस्थान, आयोग, सप्ताह, दिन और पखवाड़े मनाने वाले जो काम नहीं कर सके उसे वर्तमान की पत्रकारिता ने सम्भव बना दिया। इन्ही संचार माध्यमों की भाषा ने देश के अन्दर हिन्दी को लेकर चल रहे उत्तर-दक्षिण के विरोधों को कम किया है। मीडिया की क्षमता ने ही हिन्दी को विश्वजनीन बना दिया है। आज पत्रकारिता का हिन्दी को व्यापक बनाने में सराहनीय योगदान है।

वर्तमान समय में हिन्दी पत्रकारिता पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि उसने हिन्दी भाषा कि शुद्धता पर चोट की है। पत्रकारिता ने हिन्दी के शब्दों को तोड़-मरोड़ दिया है। यानि हिन्दी भाषा अपने विकृत रूप में उभर रही है। दरअसल वर्तमान युग जिसमें हम-आप जीवित हैं उत्तर आधुनिकता का युग है। इसमें डेरिन्डा का डमरू 'विखण्डनवाद' का भाषाई नाद रहा है, जिसे फ्रेडरिक जेमेसन 'लेट कैपटिलिज्म' वृद्ध पूंजीवाद कहते हैं और फ्रान्सीसी 'ल्योटार्ड' महान वृतान्तो के अन्त

की चर्चा करते हैं, जबकि 'ज्यां बोड्रिलार्ड' इसे 'डिजनीलैण्ड' समाज कहते हैं। कुल मिलाकर एक ऐसा संक्रमणकालीन दौर जिसमें सब कुछ 'फ्यूजन' है। गीत, संगीत, कला, दर्शन, राजनीति, फैशन, खान-पान सब कुछ। ऐसे में पत्रकारिता भी इससे कैसे अछूती रह सकती है?

वर्तमान पत्रकारिता (मीडिया) के तेवरों में भी परिवर्तन आया है। अब हिन्दी पत्रकारिता ज्यादा सनसनीखेज हो गई है। उस पर भी बाजारवाद का दबाव है। मुनाफे की भाषा रोचक होनी चाहिए। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय कलम से 'क्रान्ति' थी, अब 'बाजार' है। पत्रकारिता 'मिशन से प्रोफेशन' में ढल चुकी है, जो दिखता वो बिकता है, अब पत्रकार 'राइटर्स विदाउट्स पेन' हो चुका है। हिन्दी पत्रकारिता अब स्मार्ट हो चली हैं। अब चोटी, धोती, तिलकधारी भाषा पत्रकारिता की नहीं है। अब हिन्दी पत्रकारिता जीन्स पहन कर मॉडर्न मैट्रो, ऑनलाईन वाली फेसबुकवान, मोबाइली-मैसेज वाली हो गई है, वह अपने 'ट्वीट' की तेज 'बीट' से सबको 'चीट' कर रही है।

फ्रांसीसी समाजशास्त्री 'इमाइल दुर्खीम' ने समाज को देवता कहा है। व्यक्ति पर समाज का दबाव होता है, जैसा समाज होगा वैसा ही साहित्य होगा। पत्रकारिता की भाषा भी इसी सामाजिक सरोकारों से जुड़ती और परिवेश को ग्रहण करती है। बदलते समाजों के साथ पत्रकारिता की भाषा भी बदल जाया करती हैं, क्योंकि सन्दर्भ बदल जाया करते हैं। नई चीजों के साथ नई भाषा भी अनिवार्य होती है। विभिन्न समाजों में जो आज हिंसा, अपराध आतंकवाद की प्रवृत्ति व घटनाएँ बढ़ रही हैं, उसको प्रसारित करने की शब्दावली भी बहुत बदल गई है। पत्रकारिता का कार्य जन-जन को जागरुक करना है, जिसके लिए सहज, सरल सुबोधगम्य भाषा होनी चाहिये जो आम जन तक पहुँच सके। इस अर्थ में भाषा तो गढ़नी ही होगी, जिस धर्म को हिन्दी पत्रकारिता ने बाखूबी निभाया है।

हिन्दी भाषा की किलष्टता को सरल, सहज कर परोसना उसकी शुद्धता से खिलवाड़ नहीं है, उसी पवित्रता पर कोई आंच भी नहीं है, बल्कि उसकी अर्थवत्ता की व्यापकता का सूचक है। जनमानस तक अपनी बात पहुँचाने की सरल शैली ही पत्रकारिता की कला है। मेरे अनुसार जब-जब नई पीढ़ी लेखन के लिए सामने आएगी, भाषा में अपने समय के अनुरूप परिवर्तन लाएगी। भाषा में परिवर्तन शाश्वत है, और उसकी समृद्धि के लिए परिवर्तन होना अनिवार्य भी है। आज विश्व पटल पर हिन्दी की पहचान इसी का परिणाम है। कबीरदास कहते हैं कि 'साधो सहज समाधि भलि'।।हिन्दी भाषा की किलष्टता से मुक्त ही मीडिया की सबसे बड़ी देन है, जो समझ में आए वह हिन्दी, जो देश की एकता अखण्डता के लिए सबको जोड़ सके वह है, पत्रकारिता की हिन्दी। राष्ट्र को समर्पित हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी।

रूसी राष्ट्रपति 'गौर्वाचोव' ने 'ग्लासनोक्स' और 'पेरिसत्रोड़का' शब्द का अपने सिद्धान्त रूप में प्रसार किया था, जिसका अर्थ खुली खिड़की यानी विचारों का आदान-प्रदान (ग्लासनोत्स) तथा पुनर्निमाण (पेरिसत्रोड़का) है। यही सिद्धान्त आज हिन्दी भाषा के सन्दर्भ में पत्रकारिता परिपूर्ण करती है, यानि खुले मन से भाषा का पुनर्निर्माण।21वीं सदी के सबसे युवा देश के रूप में नेतृत्व करने वाला भारत, विश्व में सर्वाधिक तृतीय भाषा के रूप में बोली जाने वाली अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव से ओत प्रोत है। हिन्दी पत्रकारिता के इस नए कौशल ने भाषा की सभी सीमाओं को लाँघ कर, दूरियाँ मिटा कर सात समुन्दर पार से विजयी जयघोष करते हिए सम्पूर्ण विश्व को एक ग्राम्य में बदल दिया है, यही है भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम'। इसे रोको मत, टोको मत, बस बढ़ने दो।

- डॉ. अलका द्विवेदी

सम्पादक - **'अभिनव गवेषणा'**

एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी विभाग,

जुहारी देवी गर्ल्स (पी. जी.) कालेज, कानपुर

Index

	Editorial Board, Editorial		
1-	**The Importance of Biodiversity**	- Dr. V. K. Sing	07
2-	**Agroforestry in Consersation of Degraded Environment**	- Dr. Prabhakant Mishra, - Dr. Arvind Mishra	11
3-	**Microorganism as a Aanagement Tool of Bioremediation Technology : An Overview**	- Shalini Dwivedi, Deepti Shikha, Neelam Pal	15
4-	**Carbon Credit: A Step Towards Saving Mother Nature Earth**	-Mrs. Shweta Singh Chandel	21
5-	**Horticultural Plant Species for Controlling Environmental Pollution**	- Dr. V. K.Tripathi	23
6-	**Environmental Ethics : Its Relevance to Environment Conservation**	- Pragya Tiwari	26
7-	**As Strategy of Coping with Environmental Issues**	- Neha Mishra	28
8-	**Green Chemistry and Green Engineering : A Frame Work for Ustainable Technology Development**	- Anushree Sinha, Bhawana Saxena, - Neeru Nigam Sikroria	33
9-	**A Study Of Green Chemistry & Catalysis**	- Dr. Manjari Gupta	36
10-	**Green Technology : Towards A Better Tomorrow**	- Deepti Shikha, Rita Awasthi, Shalini Dwivedi	41
11-	**Comparative Efficancy of Chemical and Natural Protectants against Polyphagous Heliothes Armigera in Tomato**	- Dr. Sangeeta Awasthi, Pushpa Chowdhary, - Sangeet Awasthi	43
12-	**Big Freeze and Global Warming two most Serious Threats of Biodiversity**	- Dr. Rashmi Nirgun, - Dr. Amit Saxena	47
13-	**Impact Analysis of Socio-economic Condition on the Kitchen Waste Types, Disposal and its Distribution in Kanpur Metropolis**	- Prof. G. L. Srivastava	51
14-	**Applications of Green Chemistry Principles in every Day Life**	- Dr.- Bhawna Sharma	55
15-	**Influence of Vermicompost on dry matter yield and Chlorophyll content of Tomato plant**	- N. Mohan, J.Mohan, Vishnu Kumar Verma & Ramesh Kumar Verma	58
16-	**Environmental Auditing : A Policy for Sustainable World**	- Rita Awasthi	60
17-	**Environmental Impact of Bioethanol Production from Renewable Agro Waste**	- Alka Tangri, Madhu Sahgal	63
18-	**Degradation of Organic Wastes by U.V. Radiation**	- Anindita Bhattacharya, Alka Tangri	69

19- **Physico-Chemical and Mycological Effect on Down Stream River at Kanpur (U.P.)** 72
- Harshita Jaiswal, - Vijay Tiwari

20- **Green Chemistry : A Sustainable step towards Environment** 76
- Sangita Gupta

21- **''ई-कचरा : समस्या और प्रबन्धन एक ठोस कदम''** 78
– आरती विश्वकर्मा, डा. अराधना त्रिपाठी

22- **वर्तमान पर्यावरणीय चिन्तायें व उसके कारण** 82
– डॉ. अंजना सोनकर

23- **जैव विविधता** – अरुणा द्विवेदी 85

24- **पर्यावरणीय उतार-चढ़ाव (Environmental Degradation)** 87
– डॉ. विभा देवी मिश्रा

25- **जैव विविधता (Bio-Diversity)** – डॉ. दीपालिका 90

26- **ओजोन परत का क्षरण (OZONE DEPLETION)** 92
– डॉ. विजय कुमार तिवारी

27- **पर्यावरण अवनयन एवं आई. सी. टी. की भूमिका** 95
– डॉ. गौरव राव, शक्ति दीक्षित

28- **पर्यावरण एवं सतत् पोषणीय विकास** - डॉ. किरन शर्मा 102

29- **जैव-विविधता (BIO-DIVERSITY)** – प्रियंका सिंह 104

30- **'पर्यावरण अवनयन':विशेष सन्दर्भ-प्राकृतिक कारण एवं घटनायें** 109
- उर्वशी , डॉ. सरोज यादव

31- **पर्यावरण संरक्षण-चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं** 113
- डॉ. शालिनी विश्वकर्मा

32- **पर्यावरण विवेचना (Environmental Introduction)** 116
– डॉ. सीमा मिश्रा

33- **प्रदूषक और स्वास्थ्य संकट** – डॉ. कल्पना यादव, डॉ. फतेह बहादुर सिंह, 118
– जितेन्द्र सिंह यादव

34- **आर्थिक विकास का पर्यावरण पर प्रभाव एवं शिक्षा की भूमिका** 121
– डॉ. संजीव तिवारी